शोध-प्रारूप

नागपुरी शिष्ट कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. रितु घाँसी

सहायक प्राध्यापक (खोरठा)

राँची वीमेंस कॉलेज, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

धीरज नायक

यू.जी.सी. नेट / जे.आर.एफ.

नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

नागपुरी शिष्ट कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन

भूमिका :- कहानी गद्य लेखन की एक विद्या है| उन्नीसवी सदी में गद्य में एक एक नई विद्या का विकास हुआ, जिसे कहानी के नाम से जाना गया| परन्तु भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर मौखिक लोक कथा/कहानी की सांस्कृतिक प्रथा सदियों से चली आ रही है जिसका उदाहारण पंचतंत्र की कहानी है| दूसरी भाषा में कहा जाय तो कहानी वह रचना है जिसमे जीवन की किसी एक एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है|

कहानी में वो ताकत है जो सुनने-सुनाने एवं पढ़ने वाले सभी को अपनी ओर आकर्षित कर मंत्र मुग्ध ख़ुशी से गम और गम से ख़ुशी भी रग-रग में भर देने तक का ताकत रहता है| इसलिए भारत एवं झारखण्ड जैसे कृषि प्रधान देश में भी ग्रामवासी जब शाम में एक जगह मिल कर अपनी थकान को दूर करने के लिए गीत-गोंविंद, नृत्य एवं कहानी कहने आदि का प्रचलन प्राचीन काल से चलता आ रहा है| जिसमें पढ़ा- लिखा एवं अनपढ़ सभी समान रूप से भाग लेते थे| इसलिए छोटानागपुर समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना से सम्बंधित अनेक कहानी का रचना हुई है|

नागपुरी साहित्य में लोक कथा / कहानी एवं शिष्ट कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान है| यही कारण है कि नागपुरी गद्य साहित्य जैसे-जैसे आगे बढ़ा वैसे-वैसे लोक कथा एवं शिष्ट कहानियों का तेजी से विकास होता चला गया| इसलिए नागपुरी साहित्य विकास में कहानी को एक महत्वपूर्ण विधा माना गया है , जो समय के साथ अपना प्रभाव उपस्थित कर रही है|

नागपुरी लोक कथा का इतिहास तो अति प्राचीन है, जो सदियों से घर के बूढ़ा-बुजुर्ग जैसे दादा-दादी, नाना-नानी एवं घर के सदस्यों द्वारा लोक मुख से पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चलते आ रही हैं, परन्तु आधुनिक नागपुरी कहानी के इतिहास मुख्यतः नागपुरी के लोक कथा संग्रह करने वाले साहित्यकारों के साथ शुरू होता है जिनमें से नाम प्रमुख है- रेव फादर कोनराड बुकाउट, हेनरिक फ्लोर, एल कार्डोना, जे जान्स, धनीराम बक्शी, दुखहरण साहु, फादर पीटर शांति नवरंगी, प्रीतम मसीह, बारो भईया, भुनेश्वर अनुज, प्रेमचंद नवरंगी, सीता कुमारी, प्रो. राम प्रसाद, गिरिधारी राम गौन्झू आदि नाम आते हैं|

नागपुरी इस क्षेत्र का संपर्क भाषा है, जिसका प्रयोग न सिर्फ सदान किन्तु छोटानागपुर में निवास करने वाले जनजातियाँ जैसे- मुण्डा, उराँव, खड़िया आदि करते हैं| जिसका विस्तार क्षेत्र राँची, लोहरदगा, गुमला, खूंटी, सिमडेगा, रामगढ़ के कुछ क्षेत्र आदि तथा राज्य के बहार उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, असम, अंडमान-निकोबार, बिहार आदि क्षेत्रों में पाया जाता है| यही कारण है कि नागपुरी भाषा साहित्य में अनेकों साहित्यकार देखनो को मिलते है, जो आधुनिक नागपुरी कहानी साहित्य को आगे बढ़ा रहें हैं| जैसे- प्रफ्फुल कु. राय, डॉ. बिसेश्वर प्रसाद केशरी, श्री हरिनंदन राय,श्रवन कु. गोस्वामी, पंचम साहु, नईमुद्दीन मिरदाहा, योगेन्द्र नाथ तिवारी, गिरिधारी राम गौंझू, भुनेश्वर अनुज, कुमारी वासंती, शिव अवतार चौधरी, उपेंद्रपाल नहन, डॉ. उमेश नन्द तिवारी, डॉ. सविता केशरी, ईश्वरी प्रसाद, डॉ. राम प्रसाद, डॉ. शकुंतला मिश्र आदि| इसके साथ ही साथ पत्र पत्रिकाओं जैसे आदिवासी, नागपुरी, जय झारखण्ड, छोटानागपुर सन्देश, नागपुरी कला संगम स्मारिका आदि पत्रिकाओं में नागपुरी कहानी प्रकशित होते रहे हैं| जिसमे नागपुरी कहानी साहित्यकारों, लेखको, कवियों आदि को नागपुरी कहनी लिखने के प्रति रुझान बढ़ती गई| और एक से बढ़कर नागपुरी आधुनिक कहानी रचते गए| शिष्ट कहानियों का इतिहास मुख्यतः आजादी के बाद 1960 के आस-पास से देखी जाती है|

छोटानागपुर के नागपुरी साहित्यकारों के कहानी मुख्यतः छोटानागपुर के मिट्टी से जुड़ी हुई है और यहाँ के जनजीवन के हर्ष-विषाद, स्थानीय वातावरण, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा जल, जंगल जमीन में रहने वाले पशु-पक्षी, पहाड़ पर्वत झील झरना आदि तत्वों से प्रभावित मिलती है| जो काफी मनमोहक, कर्ण प्रिय एवं सामाजिक, सांस्कृतिक जनचेतनाओ से भरी है| जैसे कुछ कहानियों का उदाहारण देख सकते हैं -

सहिया माय

यह शीर्षक रुगड़ा-खुखड़ी किताब से लिया गया है| जिसका रचनाकार सहनी उपेंद्रपाल ‘नहन’ जी हैं| इस कहानी के मुख्यतः दो पात्र डॉ० पूनम और डॉ० राकेश है| इनके माध्यम से कहानीकार वृक्षों से प्रेम, आस्था और उसकी रक्षा का भाव एवं चेतना जगाती है| इससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता और सचेत होने की प्रेरणा पाठको को मिलती है|

बुधनी

यह शीर्षक भी ‘रुगड़ा-खुखड़ी’ कहानी संग्रह से ली गई है| जिसका रचनाकार प्रो. बालमुकुन्द बड़ाईक हैं| जिन्होंने बुधनी, लहरू, करमपाल, डॉक्टर और भगत आदि पात्रो के माध्यम से

समाज में फैली डायन-विसाही जैसे कुप्रथा तथा अंधविश्वास को दूर करने पर आधारित है जो अन्धविश्वास से ऊपर उठने की ये सामाजिक चेतना जगाती है|

मांदी

यह शीर्षक भी 'रुगड़ा-खुखड़ी' कहानी संग्रह से ली गई है| जिनका रचनाकार डॉ० उमेश नन्द तिवारी हैं| इस कहानी में मांदी, रंथु और अमरित के पात्र के माध्यम से कहानीकार मांदी और रथु का गृहस्त जीवन के साथ-साथ छोटानागपुर झारखण्ड में तीव्र गति से हो रहे ग्रामीण से शहरी क्षेत्र में बदलाव को एवं समाज में हो रहे परिवर्तन को दर्शाते है| जो पाठको को एक सामाजिक चेतना जगाती है कि समाज में इतना तेजी से बदलाव कहीं हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान विलुप्त न हो जाए|

कुँवारी दान

ये कहानी भोटाँग डहर किताब से लिया गया है| इस कहानी में कुल 6 पात्र - देंवतु, सिटुवा, डहरू, जितनी, जोगनी और लाला हैं| यह कहानी हमें सामाजिक चेतना को उजागर करती है कि किस तरह समाज में कुछ लोग अन्धविश्वास और स्वार्थ में आकर लोग अपने सगे - सम्बन्धी को धोखा देने में पीछे नहीं हटते इसलिए समाज में किसी पर भी आँख मूँद कर विश्वास नहीं करना चाहिए|

प्रेरणाः- मातृभाषा नागपुरी के प्रति मेरे मन में बचपन से ही रुझान था, परन्तु स्नातकोत्तर के पढ़ाई के दौरान इस भाषा के प्रति और अधिक रुझान बढ़ा, क्योंकि जो लोक कथा-कहानियाँ बचपन में बुढ़ा बुजुर्ग के मुख से जो सुना और जाना था| वह अब किताबों में लिखित रूप से पढ़ने को मिला| तो नागपुरी साहित्य के प्रति मेरे दिल में और अधिक जानने की इच्छा जगी| इसके साथ ही स्नातकोत्तर पढ़ाई के दौरान मेरे पूजनीय गुरु डॉ० मनोज कच्छप यू.जी.सी. नेट जे.आर.एफ. के बारे में बताते रहते थे, जिनसे मुझे बहुत प्रेरणा मिली| इनके अलावे वर्ग शिक्षक डॉ० युगेश कुमार महतो एवं डॉ० मालती मेम के पढ़ाने और समझाने का तरीका से इस भाषा के प्रति मुझे अधिक प्रेरणा मिली|

शोध का उद्धेश्य:-

1. नागपुरी शिष्ट कहानियों में सामाजिक चेतना को बतलाना।
2. नागपुरी शिष्ट कहानियों में सांस्कृतिक चेतना को बतलाना।
3. मौखिक कहानी सुनाने की सांस्कृतिक प्रथा को बनाये रखना ।
4. नागपुरी शिष्ट कहानी साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान देना ।
5. सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में कहानी के महत्त्व को बतलाना ।
6. युवा पीढ़ी में सामाजिक-सांस्कृतिक जन चेतना को जगाना।

शोध विधि:-

शोध कार्य निम्नलिखित विधियों द्वारा किये जा सकते हैं -

1. अवलोकन विधि -
2. साक्षात्कार विधि -
3. प्रश्नावली विधि -
4. विश्लेषणात्मक विधि -
5. तुलनात्मक विधि -
6. वर्णात्मक विधि -

उपकरण :-

1. संदर्भ ग्रंथो का अध्ययन
2. पत्र-पत्रिकाएं
3. ऑडियो रिकॉर्डर
4. मोबाईल-
5. कैमरा
6. कंप्यूटर
7. इंटरनेट मानचित्र
8. अख़बार
9. कागज, कलम इत्यादि|

पूर्व अध्ययन और अनुसंधान :-

नागपुरी साहित्य के शोधार्थियों द्वारा नागपुरी साहित्य एवं साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनेक पक्षों का अनुसंधान अभी तक किये जा चूंके हैं| इनमे प्रमुख रूप से नागपुरी साहित्य के विकास, उत्पति, गद्य, पद्य, नागपुरी गीतों की छंद, महाकाव्य, खण्डकाव्य, कहानी, उपन्यास, आदि है| इसके साथ ही साथ कवि घासी राम, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, कवि कंचन, प्रफुल्ल कुमार राय, डॉ. बी. पी. केशरी, शारदा प्रसाद शर्मा, नईमुद्दीन मिरदाहा, आदि के जीवनी पर भी शोध किये गए है मेरे ज्ञात से अभी तक **"नागपुरी शिष्ट कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना : एक अध्ययन "** विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है| प्रस्तावित शोध विषय नवीनतम एवं विशिष्ट होगा|

शोध की प्रासंगिकता :-

साहित्य एक विकासात्मक प्राविधि है, जिसका विकास होता रहता है और होता रहेगा| जो आने वाले भविष्य में जैसे-जैसे नागपुरी भाषा साहित्य का विकास होगा, समृद्धी होगा वैसे-वैसे पाठको को विद्यार्थियों को अपने नागपुरी भाषा साहित्य के प्रति जानने, सिखने और गहन अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी| वैसे समय में मैं आशा करता हूँ की मेरे द्वारा किया गया यह शोध विद्यार्थियों और पाठको को सहायता और मदद मिलेगी|

शोध प्रारूप :-

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है :-

- **प्रस्तावना -**
- **शोध विषय की प्रेरणा -**
- **औचित्य -**
- **शोध कार्य की विषय सीमा -**
- **शोध विधि -**
- **विषय से संबंधित पूर्व में किये गये शोध कार्यो का विवरण -**

पहला अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानी का अवधारणा -

(क) कहानी का परिभाषा -

(ख) कहानी के तत्व/ विशिष्टताएं -

(ग) कहानियों के प्रकार एवं रचनात्मक शैलियाँ -

(घ) नागपुरी में प्रचलित कहानियाँ एवं उनके रूप -

दूसरा अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानी का उद्भव एवं विकास -

(क) नागपुरी कहानी के विकास के विविध चरण एवं वर्त्तमान स्थिति -

(ख) सन् 1947 के पूर्व एवं बाद के नागपुरी कहानी का प्रभाव -

(ग) शिष्ट कहानियों का प्रारंभ एवं वर्त्तमान स्थिति -

(घ) नागपुरी कहानियों के विकास में पत्र-पत्रिकाओं एवं संचार माध्यमों का योगदान -

तीसरा अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानियों की विशिष्टता -

(क) विषय-वस्तु सम्बंधित विशिष्टता -

(ख) कहानियों में कलात्मक विशिष्टता -

(ग) कहानियों में सामाजिकता -

(घ) कहानियों की भाषा शैली -

चौथा अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानी में सामाजिक चेतना -

(क) नागपुरी कहानीयों में सामाजिक मूल्य -

(ख) कहानियों का सामाजिक सम्बन्ध एवं प्रभाव -

(ग) कहानियों में प्रतिविम्बत नागपुरी समाज -

(घ) वैचारिक आन्दोलन और कहानी साहित्य -

(ङ) कहानियों में समाजिकता (सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक) एवं स्थानीय वातावरण का प्रभाव -

पांचवा अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानी में सामाजिक तत्वों का समायोजन-

(क) सामाजिक परम्पराओं के चित्रण -

(ख) सामाजिक विश्वासों की संरक्षण -

(ग) सामाजिक वर्ग-भेद, समस्याएँ एवं चुनौतियाँ -

(घ) सामाजिक जीवन में कहानी सुनने और सुनाने की परम्परा तथा इसका प्रभाव -

छठा अध्याय- सांस्कृतिक चेतना का स्वरुप निर्धारण -

(क) संस्कृति की परिभाषा एवं विशेषताएँ -

(ख) संस्कृति का बाहय स्वरुप -

(ग) संस्कृति का आतंरिक स्वरुप -

सातवाँ अध्याय - नागपुरी शिष्ट कहानियों में सांस्कृतिक तत्वों का समावेश -

(क) नागपुरी कहानी में छोटानागपुर की संस्कृति -

(ख) नागपुरी कहानी में सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न अंग (जन्म, विवाह, मृत्यु, ऋतु एवं कार्य सम्बन्धी कहानी) -

(ग) सांस्कृतिक पर्व त्योहार एवं उत्सव (कर्मा, जितिया, सोहराय, देउठान, जनी शिकार, फगुआ, बुढ़ी करम, रोग खेदना आदि) -

(घ) धार्मिक संस्कारों से सम्बंधित कहानी -

(ङ) आधुनिक सभ्यता के बदलते स्वरुप में सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन में नागपुरी कहानी का महत्त्व -

उपसंहार -

नोट:- प्रस्तावित अनुसंधान की रूप रेखा में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन भी किये जा सकते हैं।

परिशिष्ट -

1. सहायक ग्रंथो की सूची-
2. पत्र-पत्रिकाओं की सूचि -
3. साक्षात्कार सूची-
4. चित्रावली -

शोध निर्देशक	**शोधकर्त्ता**
डॉ. रितु घाँसी	**धीरज नायक**
सहायक प्राध्यापक (खोरठा)	यू.जी.सी. नेट / जे.आर.एफ.
राँची वीमेंस कॉलेज, राँची	नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची	राँची विश्वविद्यालय, राँची

संदर्भ ग्रंथ की सूची

क्र.	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1.	‘अनुज’ डॉ॰ भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2019
2.	‘केशरी’ डॉ॰ वी.पी.	काँटी	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2012
3.	‘गोस्वामी’ डॉ॰ श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	रिसर्च प्रकाशन दिल्ली	1972
4.	‘गौंझू’ डॉ॰ गिरिधारी राम	रुगड़ा-खुँखड़ी	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2023
5.	‘प्रसाद’ डॉ॰ राम	स्वतंत्रोतर नागपुरी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014
6.	बासंती डॉ॰ कुमारी	बनफूल भाग - 1	पृथ्वी प्रकाशन -	2019
7.	‘मिश्र’ डॉ॰ शकुन्तला ’तिवारी’ डॉ॰ उमेश नंद	मंजर- भाग -2	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2021
8.	‘मिश्र’ डॉ॰ शकुन्तला ’तिवारी’ डॉ॰ उमेश नंद	बन केवरा - भाग-1	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2021
9.	‘मिश्र’ डॉ॰ शकुन्तला ’तिवारी’ डॉ॰ उमेश नंद	बन केवरा - भाग-2	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2012
10.	‘मिश्र’ डॉ॰ शकुन्तला ’तिवारी’ डॉ॰ उमेश नंद	एक चकता रउद	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2012
11.	‘मिरदाहा’ नईमुद्दीन	मेंजूर पाँईख	झारखण्ड झरोखा	2013
12.	‘महतो’ डॉ. वीरेन्द्र कुमार	चमरा	देशज पब्लिकेशन बिहार- झारखण्ड	2014
13.	‘साहु’ पंचम	भोटांग डहर	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014

पत्र-पत्रिका

1. प्रभात खबर
2. हिन्दूस्तान
3. दैनिक जागरण
4. दैनिक भास्कर
5. आदिवासी
6. नागपुरी
7. जय झारखण्ड
8. छोटानागपुर सन्देश
9. स्मारिका
10. जोहार
11. हिन्दुस्तान
12. गोतिया
13. छोटानागपुर एक्सप्रेस
14. जोहार सहिया